भूमिका

भारतभूमि अनुपम प्राकृतिक संपदा से संपन्न है। इस भूमि के प्रत्येक भाग में समृद्ध मानवजीवन एवं संस्कृति को धारण करने के लिये विपुल प्राकृतिक साधन उपलब्ध हैं। भारत के लोगों ने प्रकृति की इस विशिष्ट अनुकंपा को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया है। अपने इस समृद्ध परिवेष के मध्य सहस्राब्दियों से रहते हुए उन्होंने इस प्राकृतिक प्राचुर्य का समुचित नियोजन करने की अत्यंत प्रभावी व्यवस्थाएँ, तकनीकें एवं विशेष दक्षताएँ विकसित की हैं।

संपूर्ण भारतभूमि पर अबाधित प्राकृतिक समृद्धि व्याप्त है और इसीलिये सब स्थानों पर एक विशिष्ट भौगोलिक एकरूपता दिखायी देती है। पर भारत के विभिन्न भागों के प्राकृतिक परिवेष की अपनी-अपनी विशेषताएँ भी हैं, अपना-अपना विशिष्ट वैविध्य भी है। भारत के विभिन्न भागों के लोगों ने अपने स्थानीय परिवेष की विशिष्टताओं को समझा है और उनके अनुरूप विशिष्ट एवं विविध कृषि एवं सिंचाई की व्यवस्थाएँ बनायी हैं, विविध शिल्प एवं तकनीकें विकसित की हैं, अपने घरों एवं सार्वजनिक स्थानों में विविध प्रकार के स्थापत्य का प्रदर्शन किया है, विविध सामाजिक व्यवस्थाओं एवं प्रथाओं का अनुसरण किया है। पर यह सारी विविधता विशिष्ट एवं सर्वत्र व्याप्त भारतीय प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक एकरूपता के मध्य ही अभिव्यक्त हुई है।

भारत की विविध प्राकृतिक संपदाओं और विविध भौतिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्थाओं का अवलोकन करना एक अनूठा मार्मिक अनुभव होता है। भारत के लोग अपने परिवेष के साथ सामञ्जस्य बैठाते हुए उसके अनुरूप अपने को ढालते रहे हैं। उनके अपने परिवेष के साथ इस प्रकार एकरूप हो जाने में, अपने आसपास की प्रकृति के अनुरूप ढलते जाने में, एक विशिष्ट कलात्मकता के, काव्यात्मकता के दर्शन होते हैं।

भारत के विभिन्न भागों के भूगोल, भूविज्ञान, भूगर्भीय संरचना, जलवायु, जनसांख्यिकी, भू-उपयोग, कृषि, पशुपालन, शिल्प, उद्योग, संस्कृति एवं धर्म आदि के बारे में विस्तार से जानना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। विभिन्न भागों के लोगों के जीवन एवं परिवेष में कोई सुधार अथवा विकास करने के किसी प्रभावी हस्तक्षेप के पूर्व तो यह सब जानना अनिवार्य ही है। मध्यप्रदेश जिला संसाधन मानचित्रकोष प्रकल्प प्रदेश के सब जिलों के लिये विस्तृत भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सांख्यिकी एवं तकनीकी सूचनाओं का संकलन एवं विश्लेषण करने और विभिन्न जिलों में प्रकृति एवं सभ्यता के मध्य व्यवहार में प्रकट होने वाली विशिष्ट काव्यात्मकता को अभिव्यक्त करने का एक प्रयास है।

टीकमगढ़ बुंदेलखण्ड में पड़ता है। उत्तर में यमुना नदी और दक्षिण एवं पश्चिम में विंध्यपठार से घिरी अर्धवृत्ताकार भूमि को बुंदेलखण्ड के नाम से जाना जाता है। टीकमगढ़ बुंदेलखण्ड के प्रायः केंद्र में है। स्वतंत्रता से पूर्व तक टीकमगढ़ जिले का क्षेत्र बुंदेलों का केंद्रीय एवं विख्यात ओरछा राज्य हुआ करता था। अठारहवीं शती के प्रायः अंत तक ओरछा ही इस क्षेत्र की राजधानी थी, 1783 में ओरछा के राजा अपनी राजधानी दक्षिण में टीकमगढ़ ले गये।

बुंदेलखण्ड क्षेत्र की भूगर्भीय संरचना अपने-आप में विशिष्ट है। भूवैज्ञानिकों ने इस संरचना को 'बुंदेलखण्ड क्रेटॉन' का नाम दिया है। यह क्रेटॉन पृथ्वी के सबसे पुराने आर्कियन युग के ठोस कणाश्म (ग्रेनाइट) शैलों से बना है। जैसे-जैसे हम इस क्षेत्र में उत्तर अथवा पूर्व की ओर बढ़ते हैं वैसे-वैसे ये कणाश्म शैल नदियों द्वारा लायी गयी जलोढ मृदा की परत से ढकने लगते हैं। यह परत क्रमशः गहराती हुई अंततः गंगा-यमुना के मैदान से मिल जाती है। टीकमगढ़ इस संरचना के दक्षिणी कणाश्म वाले भाग में पड़ता है पर जिले के अधिकतर क्षेत्र में ये शैल मिट्टी की पर्याप्त मोटी परत से ढ़के हैं।

सिंध, बेतवा, केन एवं तमसा बुंदेलखण्ड से उत्तरपूर्व की ओर बहती हुई विभिन्न स्थानों पर यमुना से मिलती हैं। टीकमगढ़ बेतवा के पूर्व में स्थित है। बेतवा की सहायक जामनी नदी जिले की पश्चिमी और धसान दक्षिणी एवं पूर्वी सीमाओं के साथ दूर तक बहती है। जिले में पहाड़ियों के मध्य के अंतरालों को पाट कर बनाये गये अनेकानेक ताल भी हैं। तालों में व्यापक स्तर पर रुके पानी, मिट्टी की पर्याप्त मोटी परत और बेतवा, जामनी एवं धसान के पानी से प्राप्त पोषण के कारण यहाँ की भूमि कृषि की दृष्टि से पर्याप्त उर्वर एवं समृद्ध है।

कृषि के दृष्टि से बुंदेलखण्ड सर्वदा समृद्ध रहा है। सन् 641 ईसवी में हर्षवर्धन के समय चीनी बौद्ध यात्री ह्युएन त्सांग

भूमिका

बुंदेलखण्ड आया था, उसके वृत्तांतों में यहाँ की समृद्ध खेती का विवरण मिलता है। पर पिछले दशक में कई वर्षों की निरंतर अल्पवर्षा के कारण बुंदेलखण्ड में अभाव की स्थिति बनी रही थी। टीकमगढ़ पर भी इसका गहन प्रभाव पड़ा था। अस्सी के दशक के अंत तक जिले में 450 किलोग्राम प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष खाद्यान्न का उच्च उत्पादन हो रहा था। उसके पश्चात् प्रतिव्यक्ति उत्पादन घटने लगा। इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में तो जिले की खेती में बहुत बड़ा ह्रास हुआ था। 2005-08 के त्रिवर्ष में जिले में खाद्यान्न का माध्य वार्षिक उत्पादन मात्र 65 किलोग्राम प्रतिव्यक्ति रह गया था। वह विकट काल था। अब पिछले कुछ वर्षों में कृषि में पर्याप्त सुधार हुआ है। 2012-13 में खाद्यान्न का उत्पादन 300 किलोग्राम प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष तक पहुँचा है, इसके अतिरिक्त 62 किलोग्राम प्रतिव्यक्ति तिलहन का उत्पादन भी हुआ है। लगता है कि जिला एकदा पुनः अपनी ऐतिहासिक कृषि समृद्धि की ओर बढ़ने लगा है।

ऐतिहासिक दृष्टि से बुंदेलखण्ड चंदेलों एवं बुंदेलों का क्षेत्र है। पहले चंदेले और फिर बुंदेले यहाँ शताब्दियों तक राज्य करते रहे। इन दोनों राजवंशों में अनेक महान् एवं अत्यंत पराक्रमी राजा हुए। इनमें से अनेकों ने भव्य मंदिरों, तालों एवं प्रासादों का निर्माण करवाया। इस कारण बुंदेलखण्ड उच्च-स्थापत्य के स्मारकों के लिये विख्यात है। चंदेलों द्वारा निर्मित खजुराहो के विख्यात मंदिर क्षेत्र के छतरपुर जिले में हैं। ओरछा बुंदेलों की सबसे महत्त्वपूर्ण एवं भव्य राजधानी रहा है, यह पूरा नगर ही बुंदेलों के भव्य स्थापत्य का उदाहरण है। ओरछा नगर में और पूरे टीकमगढ़ जिले में बुंदेलों के काल के अनेक स्मारक है, लगता है कि यहाँ के लोग अपने इस भव्य इतिहास के मध्य ही जी रहे हैं।

ओरछा राज्य का अयोध्या के श्रीरामचंद्र के साथ विशेष संबंध रहा है। आख्यान है कि ओरछा के धर्मपरायण एवं पराक्रमी राजा मधुकर शाह (1554-92) की पत्नी गणेश कुंवर श्रीरामचंद्र की अनन्य उपासिका थी और वे स्वयं वृंदावन के श्रीकृष्ण के भक्त थे। मधुकर शाह के अनुरोध पर गणेश कुंवर श्रीरामचंद्र को अयोध्या से ओरछा लाने निकल पड़ीं और श्रीरामचंद्र उसका आग्रह स्वीकार कर ओरछा आ गये। यह घटना विक्रम संवत् 1630 तदानुसार 1573 ईसवी की कही जाती है। तब से श्रीरामचंद्र ओरछा के अधिपति राजा के रूप में प्रतिष्ठापित हैं और ओरछा रामराजा सरकार की नगरी के रूप में विख्यात है। रामराजा का मंदिर ओरछा नगर का सबसे महत्त्वपूर्ण स्थल है। ओरछा के राजपरिवार का अयोध्या के साथ संबंध अब भी बना हुआ है, अयोध्या के भव्य एवं ऐतिहासिक कनक भवन के संरक्षण के उत्तरदायित्व का निर्वाह अब भी ओरछा का राजपरिवार ही करता है।

टीकमगढ़ के संसाधन मानचित्रकोष का यह हिंदी संस्करण बनाते हुए जहाँ-जहाँ संभव हुआ वहाँ नवीनतम आंकड़ों का उपयोग कर लिया गया है। भूमि, सिंचाई एवं कृषि संबंधी आंकड़े 2012-13 तक ले लिये गये हैं, जनसांख्यिकी के विभिन्न आयामों का वर्णन 2011 की जनगणना के अनुरूप हो गया है, पशुधन के आंकड़े 2012 की पशुगणना तक गिन लिये गये हैं। 2011 की जनगणना एवं 2012 की पशुगणना में जिले में अनेक बड़े परिवर्तन हुए दिखते हैं, इनका उल्लेख यथास्थान हो गया है, पर इनमें से कुछ आयामों पर विस्तृत शोध की आवश्यकता है।

इस प्रकल्प संबंधी हमारे प्रस्ताव को स्वीकार कर हमें प्रदेश के विभिन्न जिलों की भूमि, परिवेष एवं लोगों के विषय में इतने विस्तार से जानने का अवसर देने के लिये हम मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के आभारी हैं। जिला संसाधन मानचित्रकोष के काम के लिये नियोजित परिषद् के वैज्ञानिक तो उत्साहपूर्वक इस कार्य में लगे ही हैं, परिषद् के अन्य सब विभागों के वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों का सहयोग भी हमें सर्वदा मिलता रहा है।

केंद्र में मेरे साथी श्री एम. डी. श्रीनिवास और श्री बनवारी का सहयोग सब कार्यों में बना ही रहता है। और, आञ्जनेय, जीविषा, अर्चन एवं कुसुम के स्नेह, रुचि एवं प्रोत्साहन से ही सब कार्यों का संपादन हो पाता है। उन सबका आभार।

नयी दिल्ली
रक्षाबंधन, कलि 5117
29 अगस्त 2015

जितेन्द्र बजाज